श्रीहरिः

सन्ध्योपासनविधिः ।

कातीयपरिशिष्टसूत्रानुकूलः

शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिनीय शाखा और
पारस्करगृह्यसूत्रों के अनुसार यह
सन्ध्योपासन की पद्धति
छापी गई है ।

सम्पादक—

पं० भीमसेन शर्मा वेदव्याख्याता ।

द्वादशावृत्ति २०००
सन् १९२४ सं० १९८०
मूल्य)॥ २) सैकड़ा

पण्डित वेदनिधि मिश्र के प्रबन्ध से
ब्रह्मप्रेस इटावा में मुद्रित ।

त्रिकालसन्ध्योपासनविधिः।
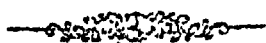
प्रथम प्रातःकाल ईशान कोणकी ओर मुखकर आसनपर बैठकर वाम हाथमें शुद्ध होमादि की भस्म ले के उसमें किञ्चित् जल मिलाकर दहिने हाथसे भस्मको निम्न मंत्रोंसे मले-

अग्निरिति भस्म। वायुरिति भस्म। जलमिति भस्म। स्थलमिति भस्म। व्योमेति भस्म। सर्वꣳहवा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूꣳषि भस्मानीति ॥ १ ॥

तत्पश्चात् भस्म को अभिमन्त्रण करे अर्थात् भस्म की ओर देखता हुआ निम्न मन्त्रों को पढ़े—

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥२॥

ओं प्रसह्यभस्मनायोनिमपश्चपृथ्वीमग्ने। सꣳसृज्यमातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान्पुनरासदः ॥३॥

फिर निम्न मन्त्रों से भस्म लगावे।

ओं--त्र्यायुषं जमदग्नेः, ललाटे। ओं--कश्यपस्य त्र्यायुषम्, ग्रीवायाम्। ओं यद्देवेषु त्र्या-

मुषम् । दक्षिणबाहुमूले । ओं तन्नो अस्तु श्रेयपस् हृदये ॥४॥

फिर निम्न मन्त्र से कण्ठ में रुद्राक्ष माला धारण करे।

ओं—मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो-गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्र-भामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥५॥

अपवित्र इति वामदेवऋषिः। विष्णुर्देवता। गायत्री छन्दः। हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ६॥

विनियोग सहित इस मन्त्रसे हृदयस्थान पर जल सेचन करे और भगवान् के स्मरण द्वारा भीतर हृदय को शुद्ध करे तदनन्तर आगे लिखे सङ्कल्प को पढ़े।

ओं—तत्सदद्यब्रह्मणो द्वितीयेपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलि-युगे कलिप्रथमचरणे अमुकामुकेषु मासपक्षतिथिवासरेषु ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाऽहं प्रातः सन्ध्योपासनं करिष्ये ॥७॥

इस वाक्य में पढ़े प्रातः शब्द के स्थान में सायङ्काल की सन्ध्या के समय सायं सन्ध्यो० इस प्रकार कहे। मेरे कुसंस्कार हृदय की मलिनता ग्लानि आदि रूप पाप दूर होने द्वारा श्रीपरमात्मा के प्रसन्न होने के लिये प्रातः वा सायङ्काल की सन्ध्याका फल वा प्रयोजन दिखाया गया है।

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मोदेवता। सुतलं छन्दः। आसने विनियोगः ॥

ओ३म् पृथ्वि! त्वया धृता लोका त्वं देवि विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ८ ॥

इस मन्त्र को विनियोग सहित पढ़ता हुआ पृथिव्यभिमानी देवता को प्रणाम करे और कुशों द्वारा आसन पर जल सेचन करे तदनन्तर आगे लिखे दो स्मार्त्त मन्त्र पढ़ के बायें पगकी एड़ी से तीन बार पृथिवी में ताड़ना करे—

अपसर्पन्तुतेभूता येभूताभूमिसंस्थिताः।
येभूताविघ्नकर्त्तार-स्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥९॥
अपक्रामन्तुभूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन सन्ध्याकर्मसमारभे ॥ १० ॥

तदनन्तर बायें हाथ में चार कुश तथा दहिने हाथ में पवित्री सहित तीन कुश लेके ओंकार सहित गायत्री मन्त्र पढ़के शिखामें गाँठ लगावे और ईशानाभिमुख होके अगले तीन मन्त्रोंसे ३ आचमन करे। ये मन्त्र वेदके नहीं किन्तु स्मार्त्त हैं

ओं-केशवाय नमः ओं नारायणाय नमः। ओं माधवाय नमः ॥११॥

तदनन्तर विनियोग सहित (ऋतं च०) इस अघमर्पण सूक्त को एक बार पढ़ के तीन बार आचमन करे।

ओं अघमर्पणसूक्तस्याघमर्पण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः। भाववृत्तो देवता। अश्वमेधावभृथे विनियोगः। मन्त्राः

ओं--ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततोरात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः ॥१२॥

समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोऽजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतोवशी ॥१३॥

सूर्याचन्द्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोस्वः ॥१४॥

इसके पश्चात् ओंकार सहित गायत्री मन्त्र पढ़ के जल लेकर उससे अपने सब ओर रक्षा करे।

ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवताशुक्लोवर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः। ओं सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निर्वाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः। अनादिष्टप्राय-

ऋषिर्ते प्राणायामे विनियोगः । ओं गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः । सविता देवता । अग्निमुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः । ओं शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्यादेवताः । यजुश्छन्दः प्राणायामे विनियोगः ।

इस प्रकार ऋषि आदि का स्मरण वा उच्चारण करके आसन बांध आँख बन्द कर और मौन होके मन्त्रार्थका स्मरण करते हुए नासिका के दाहिने छिद्र को अँगूठेसे बन्दकर के चतुर्भुज श्यामसुन्दर भगवान को अपने नाभि कमल में ध्यान धरता हुआ जितनी देरमें तीनवार वा एकवार मनसे मंत्र को पढ़े उतनी देर तक नासिका के बायें छिद्र से धीरे २ श्वांस खींचता जावे, तदुपरांत अपने हृदयमें कमलके आसन पर बैठे रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्मा जी का ध्यान श्वांसको रोके हुए ही करे और साथ ही तीनवार वा एकवार उसी संपूर्ण मंत्रको मनसे पढ़े । तदनन्तर नासिकाके दहिने छिद्रसे धीरे २ श्वास को निकालने के साथ ही तीनवार वा एकवार मनसे प्राणायाम मन्त्र को पढ़े और इसके साथही अपने मस्तक में श्वेत वर्ण त्रिनेत्र शिवजी का ध्यान करता जावे तथा दहिने छिद्रसे श्वासको निकालते समय अनामिका और कनिष्ठका अँगुली से नासिकाके बायें छिद्रको दबा लेना चाहिये । इस प्रकार यह एक प्राणायाम हुआ ऐसे तीन प्राणायाम करे ।

प्राणायाम का मन्त्र ।

ओं-भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् । ओंतत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गोदेवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ओं आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् ॥१५॥ तैत्तिरीयारण्यके ।

इसके पश्चात् (सूर्यश्चमा०) इस मन्त्र को विनियोग सहित एकवार पढ़के प्रातःसंध्या में तीनवार आचमन करे।

विनियोगः-ओंसूर्यश्चमेति ब्रह्मार्षिः । प्रकृतिश्छन्दः सूर्योदेवता । अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ओं-सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्तां यद्राव्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितंमयि । इदमहममृतयोनौसूर्ये ज्योतिषिजुहोमिस्वाहा ॥१६

मध्यान्ह सन्ध्या करनेके समय (सूर्यश्चमा०) मंत्रके स्थान में (आपः पुनन्तु०) इस आगे लिखे मंत्रका पढना चाहिये ।

ओं आपः पुनन्तु इतिमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः । आपो देवता । अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ओं-आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम् । पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् ॥१७॥ यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम ॥ सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा ॥१८॥

तथा सायङ्काल की संध्यामें (सूर्यश्च मा०) इस मन्त्रके स्थान पर (अग्निश्च मा०) इस आगे लिखे मन्त्र को विनियोग सहित पढ़के आचमन करे

ओं अग्निश्चमेतिमन्त्रस्य रुद्रऋषिः। प्रकृतिश्छन्दः। अग्निर्देवता। अपामुपस्पर्शने विनियोगः। मन्त्रः-

ओं अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चिद्दुरितं मयि । इदमहममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥१९॥

इसके पश्चात् आगे लिखे (आपोहिष्ठा०) इत्यादि तीन मंत्रों के नव भागों में से पहिले से शिर में दूसरे से भूमि में तीसरे से आकाश में चौथे से भूमिमें पांचवेंसे शिरमें छठे से

फिर भूमि में सातवें से शिर और भूमि दोनों में आठवें से शिर में तथा नवम से फिर भूमि में कुशों द्वारा मार्जन करे। अपने शिर पर मार्जन करने से अपना पाप नष्ट होता और भूमि के मार्जन से असुरों का नाश होता है यह अग्निपुराण में लिखा है।

ओं-आपोहिष्ठेत्यादि तृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपोदेवता। मार्जने विनियोगः। मन्त्राः—

ओंआपोहिष्ठामयोभुवः १। ओं तानऊर्जे दधातन।२। ओं महेरणायचक्षसे।३।ओं यो वः शिवतमोरसः।४।ओं तस्यभाजयतेहनः।५।ओं उशतीरिवमातरः।६। ओं तस्मा अरङ्गमामवः ।७। ओं यस्य क्षयाय जिन्वथ।८। ओं आपोजनयथाचनः॥९॥

२०।२१।२२॥ शुक्ल यजुः संहिता अ० ११। म० ५०।५२

इसके पश्चात् जल लेकर आगे लिखे मन्त्रको विनियोग सहित तीनवार पढ़ के जल को मस्तक में लगावे।

ओं द्रुपदादिवेति मन्त्रस्य कोकिलो राजपुत्रऋषिरनुष्टुप्छन्दः। आपो देवता। सोत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

ओं द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥२३॥

इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर नासिका में लगावे और (ऋतं च सत्यं च०) इस अघमर्षण सूक्त को यथाशक्ति तीनवार वा एकवार श्वास रोककर पढ़े और यह ध्यान करे कि यह जल सूक्ष्म रूप से भीतर जाकर पापों को साथ लेकर निकला है इसलिये उसे देखना न चाहिये किन्तु बाईं ओर पृथ्वी पर पटक दे।

ओं अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः। भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः॥ मन्त्रः—

ओं ऋतंच सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत, ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ २४ ॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २५ ॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥२६॥

इसके पश्चात् (अन्तश्चरसि०) मन्त्र पढ़के आचमन करे।

अन्तश्चरसीति मन्त्रस्य तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः। आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ओं०-अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपोज्योतीरसोऽमृतम् ॥२७

तदनन्तर पुष्प और जल ले के खड़े होकर गायत्री मंत्र पढ़के सूर्यनारायण को प्रणाम करे ।

ओं एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥२८॥

मध्यान्ह में ऊपरको हाथ उठा कर प्रातः तथा सायंकाल अंजली बाँध हाथ पसार के सूर्य की ओर देखता हुआ आगे लिखे मन्त्रों को विनियोग सहित पढ़ के उपस्थान करे ।

उद्वयमुदुत्यमितिद्वयोः प्रस्कण्वऋषिः । सूर्योदेवता । अनुष्टुप् गायत्री च छन्दः । चित्रंदेवानामित्यस्य कुत्सांगिरसऋषिः । सूर्योदेवता त्राष्ट्री त्रिष्टुप्छन्दः । तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः । सूर्योदेवता ब्राह्मीत्रिष्टुप्छन्दः । सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ यजु० २० । २१

ओ३म्-उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ २९ ॥

ओं-उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ ३० ॥ ओं चित्रं देवानां-

मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आ-
प्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्यआत्माजगत-
स्तस्थुषश्च ॥३१॥ य० ७ ॥ ४१ ॥४२॥ ओं तच्च
क्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः
शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं
प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं,
भूयश्च शरदः शतात् ॥३२॥ य० ३६ । २४

इसके पश्चात् आगे लिखे मन्त्रोंसे इन्द्रियोंका स्पर्श करे अर्थात् पहिले से अंगुलियों के द्वारा मुख दूसरे से तर्जनी अगुष्ठ द्वारा नासिकाके दोनों छिद्रोंका, तीसरेसे अनामिका अंगुष्ठ द्वारा दोनों आंखों का चौथे से मध्यमांगुष्ठ द्वारा दहिने कान का पांचवें से उसी प्रकार बायें कानका; छठेसे प्रथम दहिने कन्धे का सातवें से अंगुलियोंके अग्रभाग द्वारा वाम कन्धे का आठवें से एक साथ दोनों जंघों का और नवम मन्त्र से दोनों हाथों द्वारा शिर से लेके पग पर्यन्त सब अंगों का स्पर्श करे।

ओं-वाङ्म आस्येऽस्तु ॥१॥ ओं नसोर्मे-
प्राणोस्तु ॥२॥ ओं अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु ॥३॥ ओं

कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु॥४॥ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥५॥ ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु॥६॥ ओं बाह्वोर्मे बल-मस्तु॥७॥ओं ऊर्वोर्मे ओजोस्तु ॥८॥ ओं अरि-ष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु॥९॥३३।४१

फिर आगे लिखे अनुसार गायत्री मन्त्र का जप प्रातः काल और मध्यान्ह में खड़े होकर तथा सायंकाल बैठकर करे तीनों काल में ईशानाभिमुख होकर जप करे प्रथम आगे लिखे मन्त्र को विनियोग सहित पढ़के गायत्री देवी का आवाहन करे।

तेजोऽसीति मन्त्रस्य देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं। गायत्री छन्दः। गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ओंतेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टंदेवयजनमसि ॥४२॥य०अ० १।३१

इसके पश्चात् आगे लिखे अनुसार विनियोग सहित गायत्री का उपस्थान करे।

गायत्रीति मन्त्रस्य विमलऋषिःपरमात्मा देवता। गा-यत्रीछन्दः। गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

ओं-गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्प-

ध्यपद्यसि । नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदोम् ॥४३॥

अथ गायत्रीस्वरूपम् । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिः । सविता देवता । गायत्रीछन्दः । वायव्य बीजम् । चतुर्थी शक्तिः । पञ्चविंशतिव्यञ्जनानिकीलकम् । प्रणवो मुखमग्निर्मुखम् । ब्रह्मशिरः । विष्णुर्हृदयम् । रुद्रः कवचम् । परमात्मा शरीरम् । सरस्वती जिह्वा । पिंगाक्षा त्रिपदा गायत्री अशेषपापक्षयार्थं जपेविनियोगः ॥ ७ ॥

अथ गायत्रीध्यानम्-ओं श्वेतवर्णासमुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा । श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्चभूषिता ॥ ४४ ॥ आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा । अक्षसूत्रधरादेवी पद्मासनगताशुभा ॥४५॥ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्वात्मवर्णात्मिकाम् । गायत्रींवरदाभयाङ्कुशकशाशुभ्रंकपालगुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीम्भजे ॥ ४६ ॥

गायत्री प्रार्थना-अजरेअमरेचैव ब्रह्मयोनिर्नमोस्तुते । ब्रह्मशापाद्विमुक्ताभव । विश्वामित्रशापाद्विमुक्ताभव । वसिष्ठशापाद्विमुक्ताभव । अथ गायत्री जपः ।

ओ३म्-भूर्भुवःस्वः- ओंतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्। ओ३म् ॥४७॥ य० ३, ३५ ॥

इसके पश्चात् आगे लिखे मन्त्र का विनियोग सहित पढ़के सूर्यनारायणकी प्रदक्षिणा करे अर्थात् ईशानसे पूर्वादि सब दिशाओं में मुख फेरता हुआ प्रदक्षिणा करे।

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः। विश्वकर्मादेवता त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।

ओं-विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यांधमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥४८॥य०१७।१९॥

इसके पश्चात् आगे लिखे मन्त्रसे गायत्रीका विसर्जन करे।

ओं-उत्तमेशिखरेदेवि भूम्यांपर्वतमूर्द्धनि।

ब्राह्मणेभ्यो ऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि! यथासुखम् ॥४९॥

तदनन्तर आगे लिखे अनुसार सूर्यादि देवताओं को नमस्कार करके सन्ध्या समाप्त करे।

एकचक्रोरथोयस्य दिव्यः कनकभूषितः।

समे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः॥ ५० ॥

ओ३म्-गायत्र्यै नमः । ओँसावित्र्यै नमः । ओँ सन्ध्यायै नमः । ओँ सरस्वत्यै नमः । ओँ पूर्वस्यामिन्द्रायनमः । आग्नेय्यामग्नयेनमः । ओँ दक्षिणस्यां यमाय नमः । ओँ नैर्ऋत्यां निर्ऋतयेनमः । ओँ पश्चिमायाँ वरुणाय नमः । ओँ वायव्यां वायवे नमः । ओँ उत्तरस्याँ कुबेराय नमः । ओमैशान्यामीश्वराय नमः । ओमूर्ध्वायाँ दिशि ब्रह्मणे नमः । ओ३म् अधस्ताद्विष्णवे नमः ॥ ओमनन्ताय नमः ॥

ततो जपार्पणम् ॥ अनेनामुकसंख्याकेन यथाशक्तिकृतेन गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् ब्रह्मस्वरूपो सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । ततः प्रार्थना ।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

ततो आचार्यादीनभिवादयेत् । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पर्णतां याति सद्योवन्देतमच्युतम् । अनेन सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ।

इति त्रिकालसन्ध्योपासनविधिः ।